I J C R M

International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Review Article

आदिवासी महिला सशक्तिकरण और राजनीति में उनकी भूमिका

प्रीति खेस[1]*, डॉ० आलोक कुमार[1]
[1]वाई0 वी0 एन0 विश्वविद्यालय, राँची, झारखंड, भारत

Corresponding Author: *प्रीति खेस

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.15874314

Abstract

झारखंड राज्य का निर्माण केवल एक प्रशासनिक परिवर्तन नहीं था, यह वर्षों से उपेक्षित एक सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक अस्मिता की पुकार का उत्तर था। इस चेतना में आदिवासी महिलाओं की भूमिका मात्र सहयोगी नहीं, बल्कि निर्णायक रही है। राजनीतिक नेतृत्व की धारणा जहाँ मुख्यधारा की राजनीति में प्रायः पुरुष-वर्चस्व के साथ जुड़ी रही है, वहीं झारखंड में आदिवासी महिलाओं ने इस विचार को तोड़ते हुए एक वैकल्पिक और जनसरोकार से जुड़ा नेतृत्व प्रस्तुत किया है।आदिवासी समाज की परंपराएं महिलाओं को समाज के संरक्षक के रूप में देखती रही हैं — वे खेतों की देखरेख करती हैं, पारंपरिक उत्सवों को संजोती हैं, और गांव की सामूहिक चेतना में बराबर की भागीदार रहती हैं। किंतु जैसे ही यह भूमिका औपचारिक राजनीति के मंच पर आई, आदिवासी महिलाओं को कई सामाजिक, प्रशासनिक और सांस्कृतिक चुनौतियों से दो-चार होना पड़ा। झारखंड के सुदूर गांवों से लेकर पंचायतों तक, आदिवासी महिलाओं ने न केवल इन चुनौतियों का सामना किया, बल्कि अपनी नेतृत्व क्षमता से यह भी सिद्ध किया कि वे अपने समुदाय की सच्ची प्रतिनिधि हैं।झारखंड में पंचायती राज व्यवस्था लागू होने के बाद से ही महिलाओं को राजनीतिक प्रतिनिधित्व का अवसर मिला, लेकिन केवल आरक्षण से नेतृत्व संभव नहीं था। यह नेतृत्व उभरा अपने अनुभवों, संघर्षों और समुदाय के साथ गहराई से जुड़े सरोकारों से। महिला मुखियाओं, वार्ड सदस्यों और जिला परिषद सदस्याओं ने अपने कार्यक्षेत्र में ग्रामीण विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य और पारिवारिक हिंसा जैसे मुद्दों पर निर्णायक पहल की। उन्होंने केवल कागज़ी योजनाओं तक सीमित न रहकर अपने फैसलों को धरातल पर उतारने का प्रयास किया।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 13-02-2025
- **Accepted:** 10-03-2025
- **Published:** 28-03-2025
- **IJCRM:**4(2); 2025: 377-381
- **©2025, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

खेस प्रीति, कुमार आलोक. आदिवासी महिला सशक्तिकरण और राजनीति में उनकी भूमिका. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कंटेम्पररी रिसर्च इन मल्टीडिसिप्लिनरी (Int J Contemp Res Multidiscip). 2025;4(2):377–81.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

KEYWORDS: चेतना, स्थानीय, भारतीय, भाषण, सामुदायिक, हिस्सेदारी, संघर्ष, झारखंड में आदिवासी, महिलाओं, राजनीतिक, प्रतिनिधित्व, क्रांति, मिट्टी से जुड़ी, भविष्य

© 2025 प्रीति खेस, डॉ० आलोक कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

आदिवासी महिला नेतृत्व का यह विकासक्रम झारखंड आंदोलन के ऐतिहासिक संदर्भ से जुड़ा है। जब झारखंड राज्य के निर्माण की मांग उठी, तब महिलाओं ने रैलियों, धरनों और आंदोलनों में खुलकर भागीदारी की। उन्होंने नारे दिए, गीत गाए, जेल गईं, लेकिन झुकी नहीं। वे केवल आंदोलन की सहभागी नहीं थीं, बल्कि उसकी आत्मा थीं। इस ऐतिहासिक भूमिका ने उन्हें सामाजिक रूप से एक वैधता दी, जिसने बाद में राजनीतिक मंच पर उभरने की भूमिका निभाई।

राज्य निर्माण के बाद भी, जब सत्ता संरचनाओं में आदिवासी समाज के लिए अपेक्षित परिवर्तन नहीं हुए, तब इन महिलाओं ने नेतृत्व की कमान थामी। कई बार वे उन मुद्दों को उठाने से भी नहीं चूकीं, जिन पर बोलना सत्ता को असहज कर देता था — जैसे खनन कंपनियों द्वारा भूमि अधिग्रहण, पुलिसिया हिंसा, मानव तस्करी, विस्थापन, और पारंपरिक ग्राम सभा की उपेक्षा। इन सब मुद्दों पर उन्होंने सामूहिक बैठकें कीं, ज्ञापन दिए, और आंदोलन चलाए। इन महिलाओं का राजनीतिक नेतृत्व महज सत्ता पाने की लालसा नहीं रहा, बल्कि सामाजिक न्याय की गहरी समझ से प्रेरित रहा है। उन्होंने अपने नेतृत्व को सेवाभाव से जोड़ा, और अपने समुदाय को निर्णय प्रक्रिया में शामिल करने की कोशिश की। उनका नेतृत्व उस प्रकार का नहीं रहा जिसे हम मंच, मीडिया और बड़े नारों से पहचानते हैं, बल्कि यह नेतृत्व खेतों की मेड़ों, आंगन की बैठकों, और पंचायत भवनों की चुप बहसों से जन्मा है।

उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि उन्होंने लोकतंत्र को केवल एक प्रणाली नहीं, बल्कि जीवन की एक प्रक्रिया के रूप में जिया है। जब वे सत्ता में आती हैं, तो उनके साथ गाँव की औरतें, बच्चे, और बुजुर्ग भी एक नई उम्मीद लेकर खड़े होते हैं। वे पुरुष-सहकर्मियों की तुलना में अधिक पारदर्शी, संवेदनशील और सहभागितामूलक निर्णय लेने के लिए जानी जाती हैं। वे अपनी भाषा में, अपनी संस्कृति में और अपने अनुभवों के सहारे राजनीति को एक मानवीय रूप देती हैं।

आज झारखंड की राजनीतिक परिदृश्य में आदिवासी महिला नेतृत्व केवल स्थानीय निकायों तक सीमित नहीं रहा। कई महिलाएं विधानसभा तक पहुँची हैं, और कुछ ने राष्ट्रीय मंचों पर भी अपनी बात मजबूती से रखी है। वे भाषा, संस्कृति और प्रकृति की रक्षा को राजनीतिक एजेंडा में शामिल करने की पुरज़ोर कोशिश कर रही हैं। उनके इस प्रयास ने राजनीतिक विमर्श को और अधिक लोककेंद्रित, और नैतिक बनाया है।आदिवासी महिला नेतृत्व को अक्सर समाज और सत्ता दोनों से दोहरी उपेक्षा का सामना करना पड़ता है — एक ओर वे महिला होने के कारण पितृसत्ता से टकराती हैं, और दूसरी ओर आदिवासी होने के कारण मुख्यधारा की राजनीतिक उपेक्षा की शिकार होती हैं। फिर भी, वे अपने अनुभवों, सामूहिक चेतना और स्थानीय ज्ञान के बल पर जिस तरह नेतृत्व कर रही हैं, वह भारतीय लोकतंत्र के लिए प्रेरणा है।यह नेतृत्व किसी बड़े भाषण या टीवी डिबेट से नहीं, बल्कि चुपचाप, जमीन से जुड़कर, सामुदायिक हिस्सेदारी और संघर्ष से निर्मित हुआ है। झारखंड में आदिवासी महिलाओं का राजनीतिक नेतृत्व केवल प्रतिनिधित्व की गिनती नहीं है — यह एक सामाजिक क्रांति है जो चुपचाप अपने रास्ते बना रही है, मिट्टी से जुड़ी, हिम्मत से भरी और भविष्य की दिशा तय करती हुई।

झारखंड के समाज में एक ऐसी वर्ग का निर्माण करती है। जो परंपरागत रूप से प्रताड़ना, उपेक्षा एवं पिछड़ेपन का शिकार रही है। जब संविधान की प्राथमिकताओं के अनुरूप समाज के कमजोर वर्गों को ऊपर उठाने की बात आती है, तो महिला वर्ग इसमें प्रमुख है। जंगलों में निवास करने वाले आदिवासी समुदाय की महिलाएं व ग्रामीण महिलाएं सामाजिक रूढ़ियों, परंपरागत रूप से विद्यमान सामाजिक-आर्थिक असमानतापूर्ण तथा शोषण की सामाजिक स्थिति तथा उसकी स्वतंत्रता की प्रतिबंधित करने वाले परिस्थितियों तथा अशिक्षा को समाप्त किए हुए राजनीतिक अधिकार को स्वतंत्र रूप से प्रयोग तथा राजनीतिक प्रक्रियाओं को विभिन्न चरणों में उनकी सार्थक भागीदारी की कल्पना करना कोरी साबित हुई।महिलाओं को शिक्षा के अधिकार से वंचित रखे बिना तथा संवैधानिक प्रावधानों के तहत अपने हक और अधिकार के प्रति जागरूक होने के पश्चात राज्य के राजनीतिक में महिलाओं को सम्मानजनक स्थिति प्राप्त हो रही है।

राज्य की स्थापना के पश्चात संपन्न विधानसभा के चुनाव के आंकड़े पर नजर डाला जाए तो महिलाओं का प्रतिनिधित्व विधानसभा में अलग-अलग समय में अलग-अलग स्थिति देखने को मिलता है।राज्य स्थापना के समय कुल 81 विधानसभा सीटों में केवल चार महिलाएं विधायक थी। कोडरमा विधानसभा से अन्नपूर्णा देवी, मनोहरपुर से जोबा मांझी, खिजरी विधानसभा से सावना लकड़ा और पोटका विधानसभा से मेनका सरदार चुनाव जीतने में सफल रहे थी।

झारखंड राज्य अलग होने के बाद पहली बार 2005 में झारखंड विधानसभा का चुनाव हुआ। जिसमें कुल चार महिलाएं ही चुनाव जीतने में कामयाब रही। लिट्टीपाड़ा से सुशीला हांसदा, कोडरमा से अन्नपूर्णा देवी निरसा से अपर्णा सेन तथा मनोहरपुर से जोबा मांझी चुनाव जीती।झारखंड राज्य के दूसरे विधानसभा चुनाव 2009 में संपन्न हुआ जिसमें कुल 8 महिला विधायक बनने में सफल रही झरिया से कुंती देवी, खिजरी से सावना लकड़ा, जगन्नाथपुर से गीता कोड़ा, जामा से सीता सोरेन, सिसई से गीता श्री उरांव, कोडरमा से अन्नपूर्णा देवी, सिमडेगा से विमला प्रधान तथा छतरपुर विधानसभा से सुधा चौधरी चुनाव जीती तथा विधानसभा में अपनी सक्रिय राजनीतिक सहभागिता निभाई।[5]

झारखंड राज्य के निर्माण के बाद संपन्न तीसरी विधानसभा चुनाव 2014 में हुआ। इस चुनाव में 8 महिलाएं विधानसभा से निर्वाचित होने में सफल रहे। जिसमें दुमका से लुईस मरांडी, जामा से सीता सोरेन, कोडरमा नीरा यादव, बड़कागांव निर्मला देवी, जगन्नाथपुर गीता कोड़ा, मनोहरपुर जोबा मांझी, मांडर गंगोत्री कुजूर तथा सिमडेगा से विमला प्रधान शामिल थी।

2019 में झारखंड विधानसभा का चुनाव संपन्न हुआ। इस चुनाव में सबसे अधिक बारह महिलाएं विधायक चुनाव जीतने में कामयाब रही। जामा विधानसभा से सीता सोरेन, महगामा से दीपिका सिंह पांडेय, कोडरमा से डॉ नीरा यादव, बड़कागांव से अंबा प्रसाद, डुमरी उपचुनाव से बेवी देवी, निरसा से अपर्णा सेनगुप्ता, झरिया पूर्णिमा नीरज सिंह ईचागढ़ सविता महतो, मनोहरपुर जोबा मांझी, रामगढ़ उपचुनाव सुनीता चौधरी, गांडेय उप चुनाव में कल्पना सोरेन, मांडर उपचुनाव में नेहा शिल्पा तिर्की जीती है। झारखंड के राजनीतिक में यह पहला अवसर है जिसमें एकसदनीय विधानसभा में कुल बारह महिलाएं चुनाव जीतकर एक रिकॉर्ड स्थापित किया है। हालांकि महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम सीट जीत पाती है। जो राज्य के राजनीति में महिलाओं की कम भागीदारी को दर्शाता है।

झारखंड की राजनीति में अब महिला पुरुषों से पीछे नहीं है। झारखंड राज्य के गठन के बाद से ही महिलाओं की भागीदारी बढ़ती ही जा रही है। राज्य में पंचायती राज की स्थापना के बाद तथा महिलाओं के लिए

© 2025 प्रीति खेस, डॉ॰ आलोक कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

स्थानीय स्वशासन में 50% सीट आरक्षित करने के बाद झारखंड की महिलाएं राजनीतिक रूप से अधिक सशक्त हुई है। वार्ड सदस्य से लेकर सबसे सर्वोच्च पद जिला परिषद अध्यक्ष तक महिलाएं अब चुनकर आ रही है यह महिलाएं राजनीतिक गतिविधियों में अब सक्रिय रूप से अपने भूमिका निभाने के लिए तैयार भी हो चुकी है।

मधुकोड़ा के 2006 से 2008 की सरकार में जोबा माझी और अर्पणा सेन को मंत्री पद मिला था। वहीं रघुवर दास की सरकार में नीरा यादव और लुईस मरांडी को मंत्री पद दिया गया था. 2013 में हेमंत सोरेन सरकार में अन्नपूर्णा देवी और गीताश्री उरांव मंत्री बनी थी।2019 में गठित हेमंत सोरेन की सरकार में महिलाओं दो कैबिनेट में शामिल किया गया जिसमें जोबा माझी और बेबी देवी शामिल है।

झारखंड विधानसभा में आधी आबादी का प्रतिनिधित्व अब बढ़ता दिखाई दे रहा है. मांडर उपचुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी शिल्पा नेहा तिर्की की जीत व गांडेय उपचुनाव में कल्पना सोरेन के जीतने के साथ ही विधानसभा में महिला विधायकों की संख्या बढ़कर 12 हो गई है, जो कि कुल संख्या का 13 प्रतिशत से अधिक है। राज्य गठन के बाद यह अब तक का सर्वाधिक आंकड़ा है. विधानसभा में कांग्रेस के महिला विधायकों की संख्या सर्वाधिक पांच हो गई है।

दीपिका पांडेय सिंह, ममता देवी, पूर्णिमा नीरज सिंह, अंबा प्रसाद के बाद अब शिल्पा नेहा तिर्की ने महिलाओं की संख्या में इजाफा किया है। झारखंड विधानसभा में झामुमो महिला विधायकों की संख्या तीन है। मंत्री जोबा मांझी के अलावे सीता सोरेन और सबिता महतो हालांकि लोकसभा चुनाव के समय सीता सोरेन ने झारखंड मुक्ति मोर्चा छोड़कर बीजेपी पार्टी का दामन थाम लिया तथा दुमका लोकसभा से अपना भाग्य अजमाई।, विपक्षी दल बीजेपी के महिला विधायकों की संख्या भी तीन है। नीरा यादव, अपर्णा सेन गुप्ता और पुष्पा देवी सदन में महिलाओं का प्रतिनिधित्व पार्टी की ओर से करती हैं।[8]

वही झारखंड के संसदीय चुनाव में धनबाद संसदीय क्षेत्र से प्रो रीता वर्मा चार बार लोकसभा चुनाव जीती है, पूर्व एसपी रणधीर प्रसाद वर्मा की धर्मपत्री वर्ष 1991 से 2004 तक धनबाद से लगातार सर्वाधिक चार बार सांसद निर्वाचित हुई। जमशेदपुर संसदीय क्षेत्र से राज्य स्थापना के समय आभा महतो जबकि 2007 में हुए लोकसभा उपचुनाव में सुनील महतो की हत्या के बाद उसकी पत्नी सुमन महतो यहां की सांसद चुनी गई। वहीं कोडरमा संसदीय क्षेत्र से अन्नपूर्णा देवी लगातार दो बार चुनाव जीतने में सफल रही है तथा झारखंड की पहली महिला केंद्रीय कैबिनेट में अपना जगह बनाने में सफल रही है। 2019 के लोकसभा में कोडरमा से महिला सांसद के रूप में चुनी गई। अन्नपूर्णा देवी को केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री बनाया गया। वहीं 2024 में पुनः चुनाव जीतने पर केंद्रीय महिला एवं बाल विकास विभाग सौपा गया है। झारखंड में कुल 14 लोकसभा सीट है। जिसमें पांच जनजातियों के लिए आरक्षित है जबकि एक अनुसूचित जाति के लिए सीट आरक्षित है। सिंहभूम संसदीय क्षेत्र से कांग्रेस पार्टी से गीता कोड़ा 2019 में जीत हासिल की थी। वहीं संसदीय क्षेत्र में 2024 में जोबा माझी सांसद बनने में सफल रही।एकीकृत बिहार राज्य में झारखंड क्षेत्र से कार्तिक उरांव की पत्नी सुमति उरांव दो बार चुनाव जीती और केंद्र सरकार में मंत्री बनी। वहीं रामगढ़ राजघराने की ललिता राजलक्ष्मी हजारीबाग, धनबाद और औरंगाबाद से लोकसभा का प्रतिनिधित्व की। पलामू लोकसभा क्षेत्र से सर्वाधिक चार बार चुनाव जीतने का रिकॉर्ड कमला कुमारी को प्राप्त है। वही खूंटी संसदीय क्षेत्र से सुशीला केरकेट्टा भी चुनाव जीतने में सफल रही थी। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि राज्य के राजनीति में महिलाओं की भूमिका राज्य स्थापना के पूर्व और बाद दोनों कालो में रहा है।

झारखंड राज्य की स्थापना के बाद झारखंड के राजनीति में महिलाओं की स्थिति मिली जुली रही है, लेकिन स्थापना काल से लेकर अब तक राज्य के विधानसभा में महिलाओं के प्रतिनिधित्व की संख्या में वृद्धि हुई है। सबसे अधिक महिलाएं वर्तमान समय में निर्वाचित होकर विधानसभा में पहुंचने में सफल रही है। झारखंडस्थापना के बाद अगर लोकसभा की बात की जाए तो चार संसदीय क्षेत्र धनबाद कोडरमा, जमशेदपुर, और सिंहभूम संसदीय क्षेत्र से महिलाएं प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं।

जिसमें सबसे लंबे समय तक धनबाद संसदीय क्षेत्र से प्रो रीता वर्मा शामिल है। केंद्र की राजनीति में कोडरमा संसदीय क्षेत्र की सांसद श्रीमती अन्नपूर्णा देवी शिक्षा राज्य मंत्री एवं केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री पर आसीन होकर अपनी सराहनीय भूमिका निभा रही है। इससे यह स्पष्ट होता है झारखंड की महिलाएं राजनीतिक में अपनी भागीदारी व सहभागिता बढ़ाने में सफल रही है किंतु सीटों की संख्या के आधार पर इसका प्रतिनिधित्व आज भी कम है। स्थानीय स्वशासन में 50% महिलाओं का सीट आरक्षित करने के बाद महिला प्रतिनिधित्व की संख्या में काफी इजाफा हुआ है। झारखंड की महिलाएं पहले की अपेक्षा राजनीतिक रूप से अधिक सशक्त हुई है तथा राजनीतिक गतिविधियों में अपनी सकारात्मक भागीदारी निभा रही है।

झारखंड के रांची जिले में पंचायत चुनावों के माध्यम से आदिवासी महिलाओं ने राजनीतिक नेतृत्व में अपनी सक्रिय और प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज कराई है। इन चुनावों में उन्होंने मुखिया, वार्ड सदस्य और जिला परिषद जैसे स्थानीय प्रशासनिक पदों पर न केवल चुनाव लड़ा बल्कि बड़े अंतर से जीत भी हासिल की। यह जीत मात्र एक औपचारिक प्रतिनिधित्व नहीं रही, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की दिशा में एक सशक्त हस्तक्षेप रही है, जिसमें महिलाओं ने अपनी सामूहिक चेतना, पारिवारिक समर्थन और सामाजिक प्रतिबद्धता के साथ सत्ता की नई परिभाषा गढ़ी है।

रांची जिले के खलारी प्रखंड की लक्छराप पंचायत की पुतुल देवी लगातार तीसरी बार मुखिया निर्वाचित हुईं। यह जीत उनके जनसेवा के कार्य, जनता से जुड़े रहने की शैली और गांव में सामाजिक विकास कार्यों के प्रति ईमानदार दृष्टिकोण का परिणाम रही। इसी प्रकार तुमांग पंचायत की संतोष महली ने पहली बार मुखिया पद पर विजय प्राप्त की, उनके चुनाव प्रचार और जनभागीदारी ने यह दिखाया कि महिलाएं केवल नाम के लिए नहीं बल्कि निर्णय लेने की पूर्ण क्षमता के साथ सामने आ रही हैं। मायापुर पंचायत से पुष्पा देवी लगातार दूसरी बार मुखिया बनीं, उनके कार्यकाल में गांव में प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा, आंगनबाड़ी की गुणवत्ता और विद्यालयों की स्थिति में सुधार लाया गया।

रातू पूर्वी पंचायत की सुषमा तिर्की भी लगातार दूसरी बार मुखिया बनीं। वे युवाओं के बीच विशेष रूप से लोकप्रिय रहीं क्योंकि उन्होंने स्थानीय स्कूलों में शिक्षकों की नियुक्ति और खेल सामग्री की उपलब्धता के लिए प्रभावशाली कार्य किया था। वहीं रातू उत्तरी पंचायत की महेश्वरी देवी ने पहली बार मुखिया चुनाव जीतकर यह दिखाया कि एक साधारण महिला भी यदि इच्छाशक्ति रखे और समाज के साथ जुड़ी हो, तो वह नेतृत्व की भूमिका निभा सकती है।

मुखिया के अलावा रांची जिले में वार्ड सदस्य के रूप में भी महिलाओं ने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। पहले चरण में 425 वार्ड सदस्यों का

© 2025 प्रीति खेस, डॉ॰ आलोक कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

निर्वाचन हुआ, जिनमें से 261 महिलाएं निर्विरोध चुनी गईं। यह आँकड़ा इस बात को प्रमाणित करता है कि गांव की जनता अब महिलाओं को नेतृत्व की भूमिका में देखना चाहती है और उनमें विश्वास करती है। पिठौरिया की रशीदा खातून ने वार्ड नं. 3 से तीसरी बार चुनाव जीता और इस बार अपने पति को ही हराकर निर्वाचित हुईं, जो कि सामाजिक दृष्टिकोण से एक प्रगतिशील संकेत था।

रांची जिले में जिला परिषद सदस्य के रूप में भी महिलाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। निर्मला भगत, जो कि रातू क्षेत्र से जिला परिषद सदस्य बनीं, उन्होंने 19,256 मतों से बड़ी जीत हासिल की। उनका चुनाव केवल एक राजनीतिक पद की प्राप्ति नहीं थी, बल्कि यह उस सामाजिक जागरूकता और नेतृत्व क्षमता का प्रमाण था जो आदिवासी महिलाओं में अब विकसित हो चुकी है।

इन सभी महिलाओं की जीत न केवल संख्यात्मक प्रतिनिधित्व को दर्शाती है, बल्कि यह भी प्रमाणित करती है कि आदिवासी समाज की महिलाएं अब निर्णय प्रक्रिया की केंद्रबिंदु बन रही हैं। वे पंचायत की बैठकों में अपने विचार रखती हैं, विकास योजनाओं में भागीदारी करती हैं, और जरूरत पड़ने पर भ्रष्टाचार या सत्ता के दुरुपयोग के खिलाफ आवाज भी उठाती हैं। रांची जिले की ये महिला प्रतिनिधि यह भी सिद्ध करती हैं कि ग्रामीण राजनीति में महिला नेतृत्व का उभार अब एक स्थायी और निर्णायक परिवर्तन है, जो भविष्य में झारखंड की सामाजिक संरचना को अधिक न्यायसंगत और समावेशी बनाएगा।झारखंड राज्य की सामाजिक-सांस्कृतिक बनावट में आदिवासी महिलाएं एक अत्यंत महत्वपूर्ण और अनिवार्य स्थान रखती हैं। वे केवल अपने परिवार और समुदाय के भीतर एक पारंपरिक भूमिका निभाने वाली स्त्रियाँ नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक चेतना, आर्थिक गतिविधियों और राजनीतिक आंदोलनों की आधारशिला रही हैं। आदिवासी महिलाओं का जीवन संघर्ष, श्रम, सहभागिता और सामुदायिक उत्तरदायित्व से गुँथा हुआ है, जो उन्हें न केवल अपने समुदाय का बल्कि समूचे झारखंड राज्य का स्त्री प्रतीक बनाता है।

इतिहास से लेकर वर्तमान तक, चाहे वह संथाल विद्रोह हो या बिरसा आंदोलन, झारखंड अलग राज्य आंदोलन हो या समकालीन विस्थापन विरोधी संघर्ष—हर स्थान पर आदिवासी महिलाओं की भागीदारी और सक्रियता ने यह स्पष्ट किया है कि वे केवल अनुयायी नहीं, बल्कि नेतृत्वकारी भूमिका निभाने वाली सशक्त स्त्रियाँ हैं। उन्होंने हथियार उठाए, आंदोलन की अगुआई की, जेलें भरीं, और सड़कों से लेकर संसद तक अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इस ऐतिहासिक भागीदारी ने उनके आत्मविश्वास और जन-सामाजिक दायित्व को विस्तार दिया।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से देखा जाए तो झारखंड की आदिवासी महिलाएं एक ऐसे समाज से आती हैं जहाँ परिवार में स्त्री-पुरुष के बीच अपेक्षाकृत बराबरी रही है। लेकिन आधुनिक विकास की प्रक्रियाओं, शोषणकारी संरचनाओं, खनन आधारित अर्थव्यवस्था और बाहरी दखल ने उनके जीवन को असुरक्षित और संकटग्रस्त बना दिया है। भूमि से बेदखली, वन अधिकारों की उपेक्षा, मानव तस्करी, घरेलू हिंसा, और अशिक्षा जैसी समस्याओं ने उनकी आज़ादी और गरिमा को चोट पहुँचाई है। इसके बावजूद उन्होंने साहस, संगठन और सामूहिक चेतना के बल पर बार-बार संघर्ष किया है।

राजनीतिक दृष्टि से, पंचायतों में आरक्षण और जनसंगठनों के माध्यम से आदिवासी महिलाएं अब नेतृत्व के नए आयाम गढ़ रही हैं। वे मुखिया, पार्षद, जिला परिषद सदस्य और विधायक के रूप में सामने आई हैं। वे केवल 'आरक्षित सीट भरने' वाली प्रतिनिधि नहीं हैं, बल्कि नीति निर्माण में हस्तक्षेप करने वाली, प्रशासनिक व्यवस्था को पारदर्शी बनाने वाली, और अपने समाज की आवाज़ बनने वाली जननेत्री बन रही हैं।

शैक्षणिक क्षेत्र में, हाल के वर्षों में आदिवासी लड़कियों की उपस्थिति विद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों में बढ़ी है। यद्यपि चुनौतियाँ बनी हुई हैं—जैसे विद्यालयों की कमी, पोषण का अभाव, बाल विवाह की प्रवृत्ति—फिर भी वे इन सीमाओं को पार करते हुए डॉक्टर, शिक्षक, शोधकर्ता और नौकरशाह के रूप में उभर रही हैं। यह बदलाव सामाजिक चेतना में मौलिक परिवर्तन का संकेत है।

संस्कृतिक रूप से भी आदिवासी महिलाएं अपनी परंपराओं, भाषाओं, गीतों, नृत्यों, रीति-रिवाजों और कलाओं की संवाहिका हैं। वे न केवल संस्कृति की वाहक हैं, बल्कि उसे नए संदर्भों में जीवित और प्रासंगिक भी बनाए रखती हैं। उन्होंने बाज़ारवाद, धर्मांतरण और आधुनिकता के दबावों के बीच अपनी सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा की है।

झारखंड की आदिवासी महिलाएं आज दोहरे संघर्ष में जी रही हैं—एक ओर वे पितृसत्ता और सामाजिक रूढ़ियों से लड़ रही हैं, और दूसरी ओर राज्य, बाज़ार और वैश्वीकरण से उत्पन्न असमानताओं से। इन दोहरी चुनौतियों के बीच भी वे जिस तरह संगठित हो रही हैं, आवाज़ उठा रही हैं और बदलाव की दिशा में कदम रख रही हैं, वह न केवल प्रेरणादायी है, बल्कि सामाजिक न्याय और लोकतंत्र की मजबूती का प्रतीक भी है। इस प्रकार, झारखंड में आदिवासी महिलाएं न केवल अपने समुदाय की रीढ़ हैं, बल्कि वे सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक पुनर्निर्माण और राजनीतिक सशक्तिकरण की धुरी बन चुकी हैं। उनका संघर्ष और नेतृत्व यह सिद्ध करता है कि विकास तभी सार्थक होगा जब उसमें आदिवासी स्त्रियों की भूमिका सम्मानपूर्वक, सहभागी और निर्णायक होगी। वे केवल सहनशील स्त्रियाँ नहीं, बल्कि इतिहास रचने वाली, दिशा बदलने वाली और समाज को नया आकार देने वाली शक्तियाँ हैं। इसलिए झारखंड के विकास विमर्श में आदिवासी महिलाओं का विश्लेषण मात्र एक शोध विषय नहीं, बल्कि सामाजिक पुनर्रचना की केंद्रीय शर्त बन चुका है।

निष्कर्ष

आदिवासी महिलाएँ भारतीय समाज की एक ऐसी संवेदनशील, परंतु दृढ़ इच्छाशक्ति वाली इकाई हैं, जो परंपरागत रूप से अपने समुदायों में सामाजिक और आर्थिक रूप से योगदान देती रही हैं। आधुनिक दौर में इन महिलाओं की भूमिका केवल घरेलू या समुदाय तक सीमित नहीं रही, बल्कि वे सामाजिक जागरूकता, राजनीतिक भागीदारी और नेतृत्व के क्षेत्रों में भी सक्रिय हो रही हैं। यह परिवर्तन केवल बाह्य नीतियों या योजनाओं का परिणाम नहीं है, बल्कि स्वयं आदिवासी महिलाओं के भीतर जन्मे आत्म-संवेदन और अधिकार चेतना का प्रतिफल है।

राजनीति में आदिवासी महिलाओं की भागीदारी ने न केवल उनके सशक्तिकरण की दिशा को मजबूती दी है, बल्कि यह उनके समुदायों के सर्वांगीण विकास में भी सहायक सिद्ध हुई है। पंचायती राज व्यवस्था के अंतर्गत आरक्षण ने जहाँ नेतृत्व के अवसर प्रदान किए, वहीं शिक्षा, स्वयं सहायता समूहों, और गैर-सरकारी संगठनों की सक्रियता ने उन्हें जागरूक नागरिक के रूप में स्थापित किया। आज कई आदिवासी महिलाएँ ग्राम पंचायत से लेकर विधानसभा और संसद तक में अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुकी हैं। यह नारी नेतृत्व लोकतंत्र की समावेशी प्रकृति को बल प्रदान करता है।

© 2025 प्रीति खेस, डॉ॰ आलोक कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

हालांकि यह भी एक तथ्य है कि आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण की राह अभी भी चुनौतियों से भरी हुई है। अशिक्षा, गरीबी, पारिवारिक बंधन, प्रशासनिक उदासीनता, और कभी-कभी राजनीतिक इस्तेमाल जैसी समस्याएँ उनके प्रभाव को सीमित करती हैं। इसके बावजूद, उनकी निरंतर बढ़ती भागीदारी यह संकेत देती है कि आदिवासी महिलाएँ न केवल सशक्त हो रही हैं, बल्कि वे अपने समाज को भी सशक्त बना रही हैं।

अंततः यह कहा जा सकता है कि आदिवासी महिला सशक्तिकरण और उनकी राजनीतिक भागीदारी भारतीय लोकतंत्र को जमीनी स्तर पर मजबूत करने का कार्य कर रही है। उनका अनुभव, संवेदना और नेतृत्व समाज में नये प्रतिमान स्थापित कर रहे हैं। आवश्यक है कि सरकार, समाज और स्वयं आदिवासी समुदाय मिलकर उन्हें और अधिक अवसर, समर्थन और सुरक्षा प्रदान करें, ताकि वे न केवल अपने अधिकारों के प्रति सजग रहें, बल्कि नीति-निर्माण की प्रक्रिया में निर्णायक भूमिका निभा सकें। इस प्रकार, आदिवासी महिला सशक्तिकरण कोई केवल नारा नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम बन सकता है।

संदर्भ सूची

1. Chatterjee A. Tribal Women in India. New Delhi: Siri Prakashan; 2012.
2. Mahto R. Jharkhand ke Gramin Kshetron mein Mahila Netritva aur Panchayati Vyavastha. Ranchi: Janmitra Prakashan; 2015.
3. Tirkey A. Adivasi Mahila Netritva: Chunautiyan aur Sambhavnayein. Jharkhand Vimarsh. 2019;7(2):33–48.
4. Gopal M. Ling, Jati aur Adivasi Stri: Bharat mein Bahu-Aayami Daman ka Swaroop. Gender Studies Journal. 2010;6(3):72–90.
5. Bhuj N. Women's Experiences in New Panchayati Raj. Hyderabad: National Commission for Women; 1999.
6. National Institute of Rural Development and Panchayati Raj (NIRDPR). Women Leadership in Tribal Panchayats: A Jharkhand Case Study. Hyderabad: NIRDPR Report Series; 2018.
7. Sanga B. Jharkhand ki Mahilaen aur Parivartan ki Rajniti. Ranchi: Adivasi Vichar Manch; 2021.
8. National Commission for Scheduled Tribes. Vishesh Report on Social Status of Tribal Women in Jharkhand. New Delhi: Government of India Publication; 2020.
9. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. Census 2011: Jharkhand State Report. New Delhi: Government of India; 2012.
10. Jharkhand State Commission for Women. Annual Report on the Status of Women in Jharkhand. Ranchi: Mahila Aayog Prakashan; 2019.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 प्रीति खेस, डॉ० आलोक कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/